दण्डी जी की विद्वता की थाह लेने के लिए भेजा वे युगलकिशोर गौड़, जगन्नाथ चौबे, दामोदर सनाढ्य एवं चिरंजीवी लाल आदि दण्डी जी के व्याकरण-ज्ञान तथा अतुल प्रतिभा एवं व्याख्यान शैली को देखकर अभिभूत होकर उन्हीं के शिष्य बनकर उन्हीं से पढ़ने लग गए।

उनका प्रयास रहता था कि किसी न किसी प्रकार से आर्ष ग्रन्थों के प्रचलन को और अधिक लोकप्रिय एवं सार्थक बनाया जाए। उन्होंने एक बार रंगाचार्य को भी अष्टाध्यायी और महाभाष्य पढ़ने की प्रेरणा दी थी मगर वे दण्डी जी के इस सुझाव पर मौन धारण कर गए। वे एक बार क्लेक्टर हार्डिग के पास गए और उनसे आर्षग्रन्थों के प्रचार में सरकार से सहायता करने कें लिए अनुरोध करने को कहा मगर क्लक्टर ने उत्तर दिया था- यह विषय हमारे अधिकार क्षेत्र से बाहर है। एक बार मथुरा के कार्यवाहक क्लेक्टर प्रीस्टली सैर करते हुए दण्डीजी की पाठशाला के आगे से जा रहे थे। उन्होंने दण्डीजी की स्पष्टवादिता, निर्मल चरित्र एवं पाण्डित्य के विषय में सुन रखा था अतः उनसे मिलने चले गए और अपने योग्य सेवा पूछी। दण्डीजी ने तुरन्त कहा-मेरी सेवा करना चाहते हो तो भट्टोजी दीक्षित के बनाए कौमुदी आदि जितने ग्रन्थ देश भर में है या कम से कम मथुरा में है, उन्हें जलवा दो या यमुना में प्रवाहित करा दो। नवम्बर, सन् 1859 में लार्ड केनिंग ने आगरा में दरबार किया जिसमें राजस्थान तथा उत्तरी भारत के राजा बुलाए गए। दण्डीजी राजा रामसिंह जी से मिलने स्वयं ही आगरा पहुँच गए। महाराजा ने उनका खूब आदर-सम्मान किया। उन्हें अपने आसन पर बिठाया और स्वयं श्रीचरणों में बैठे। दण्डी जी के विद्यार्थियों ने आशीर्वादात्मक मन्त्रोच्चारण किया और दण्डी जी की ओर से राजा को एक यज्ञोपवीत, एक नारियल तथा मथुरा के पेड़े भेंट किए जिसे